काव्यशास्त्र के विविध नाम

Ms. Rekha Kumari
Assistant Professor
Dept. of Sanskrit
Shivaji College .

- क्रियाकल्प
- काव्यशास्त्र
- अलंकारशास्त्र
- साहित्यशास्त्र
- सौन्दर्यशास्त्र
- आलोचनाशास्त्र तथा समीक्षाशास्त्र ।

अलंकारशास्त्र

- भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में चार अलंकारों का विवेचन किया है- उपमा, रूपक, दीपक एवं यमक। बाद में अलंकारो की संख्या में व्यपक विस्तार हुआ।
- आचार्य भामह ने 38 अलंकारों(2 शब्दालंकार तथा 36 अर्थालंकार) का निरूपण किया तथा काव्य में अलंकारों की विशेष भूमिका को स्वीकार करते हुये अपने ग्रन्थ का नाम 'काव्यालंकार' रखा।
- "न कान्तमपि निर्भूषणं विभाति वनितामुखम्"।

- अर्थात् जिस प्रकार आभूषणों के बिना कामिनी का मुख सुशोभित नहीं होता है, उसी प्रकार अलंकारों के अभाव में काव्य सुशोभित नहीं होता है।
- आचार्य भामह के द्वारा काव्य में अलंकार को महत्त्वपूर्ण स्थान दिये जाने के बाद अनेक आचार्यो ने उनके मत का समर्थन किया तथा दण्डी, उद्भट, रुद्रट आदि आचार्यों का अलंकारों के विवेचन में महत्वपूर्ण योगदान है।
- आचार्य जयदेव तो अलंकार के अभाव में काव्य के काव्यत्व को ही स्वीकार नही करते।
- इनके अनुसार अलंकार रहित काव्य मानो उष्णतारहित आग हो।
- अतः काव्यशास्त्र को अलंकारशास्त्र के नाम से भी जाना जाता है।

साहित्यशास्त्र

- 'सहितयोः भावं साहित्यम्' अर्थात् साहित्य पद से शब्द और अर्थ के सम्भाव का द्योतन होता है। जहां शब्द और अर्थ का सबन्ध हो वह साहित्य कहलाता है।
- सहित से तात्पर्य है- साथ होने की अवस्था या भाव।
- काव्यशास्त्र का एक प्रसिद्ध नाम साहित्यशास्त्र है। संस्कृत साहित्य में काव्यशास्त्र के लिये साहित्य शब्द का प्रयोग प्रायः देखा गया है।

- भर्तृहरि ने नीतिशतक में साहित्य का प्रयोग काव्य-जगत् के अर्थ में किया है, यथा-
- "साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुपुच्छविषाणहीनः"।
- यहां प्रयुक्त साहित्य शब्द काव्य जगत् के लिये है।
- वस्तुतः साहित्य ही कालान्तर में साहित्यशास्त्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ।
- अनेक आचार्यो ने अपने ग्रन्थ का नाम साहित्य से ही रखा है।
- कविराज विश्वनाथ का 'साहित्यदर्पण' नामक ग्रन्थ अत्यन्त लोकप्रिय है।
- रुय्यक के ग्रन्थ का नाम 'साहित्यमीमांसा' है।

सौन्दर्यशास्त्र

- आधुनिक काल के प्रसिद्ध काव्य-समीक्षक डॉ. कान्तिचन्द पाण्डेय ने काव्यशास्त्र के लिये सौन्दर्यशास्त्र नाम का प्रयोग किया है।
- आधुनिक समीक्षकों का मत है कि सौन्दर्य के अभाव में काव्य भी इतिहास, भूगोल आदि के समान केवल ज्ञान प्रदायक विधा है।
- काव्य में सौन्दर्य आधान के लिये ही कविगण अपनी रचनाओं में गुण, अलंकार, रीति, रस आदि तत्त्वों का समावेश करते हैं।
- आचार्य वामन के अनुसार अलंकारजन्य सौन्दर्य के कारण ही काव्य काव्य कहलाता है। यथा- 'सौन्दर्यमलंकारः'।
- पाण्डितराज जगन्नाथ का काव्य लक्षण ही सौन्दर्यपरक है- 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्'।
- अर्थात् वही शब्द काव्य कहला सकता है, जिसमें रमणीय अर्थ के प्रतिपादन की क्षमता है। अतः काव्याशास्त्र के लिए सौन्दर्यशास्त्र का नाम देना तर्कसंगत है।

आलोचनाशास्त्र तथा समीक्षाशास्त्र

- काव्यशास्त्र का मुख्य उद्देश्य है- साहित्य की समीक्षा तथा नवीन सिद्धांतों की उद्भावना एवं स्थापना।
- संस्कृत काव्यशास्त्र में रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, औचित्य एवं वक्रोक्ति जैसे सिद्धान्तों का विकास हुआ तथा साहित्य के अनेक नए-नए तत्त्वों का उन्मेष हुआ । इन्हीं तत्त्वों से काव्य की समीक्षा की जाती है । इसी कारण इसे समीक्षाशास्त्र तथा आलोचनाशास्त्र कहा जाता है।
- इस प्रकार क्रियाकल्प, काव्यालंकार, साहित्य, साहित्यशास्त्र, काव्यशास्त्र, आलोचना तथा समीक्षाशास्त्र जैसे अनेक नाम प्रयुक्त हुए हैं । इन नामों का अपना तर्क है । परन्तु वर्तमान में इस विधा के लिये काव्यशास्त्र तथा साहित्यशास्त्र प्रचलित नाम है।